अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 4, दिसम्बर 2025, पृष्ठ 117–137
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: 31 दिसम्बर 2025
जर्नल वेबसाइट: https://anubodhan.org
DOI: 10.65885/anubodhan.v1n4.2025.037

अन्तर्पीढ़ी संघर्ष एवं संयुक्त परिवार का विघटनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (गोरखपुर जनपद में स्थित पिपरौली विकासखण्ड के खोरठा गाँव के विशेष सन्दर्भ में)

अजय कुमार[1] और प्रो0 अनुराग द्विवेदी[2]

सार

सामान्य तौर पर एक समय में जन्म लेने वाले लोगों के समूह को पीढ़ी कहते है, जैसे पुरानी और नयी पीढ़ी। जब समाज में व्यक्तियों के समूह का विभाजन आयु के आधार पर किया जाता है, तो इसे भी पीढ़ी ही कहते है। सामान्यतः 20–25 वर्ष के अन्तराल के बाद एक नयी पीढ़ी का निर्माण होता है, तथा पहली पीढ़ी दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी तीसरी पीढ़ी या अवस्था में पहुँच जाती है, लम्बे समय के अन्तराल के बाद समाज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, क्योंकि मनुष्य के विचार, व्यवहार सदैव बदलते रहते हैं, समाज में परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक मूल्यों, व्यवहार प्रतिमानों आदि में बदलाव आ जाता है, जिसके कारण व्यक्तियों के विचारों, मूल्यों, आदतों, खान–पान, रहन–सहन में परिवर्तन होने लगता है।

संघर्ष एक सार्वभौमिक सामाजिक प्रक्रिया हैं, जो प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में अवश्य पायी जाती है, जैसे–जातिगत–संघर्ष, प्रजातीय संघर्ष, अन्तरपीढ़ी संघर्ष इत्यादि। जब समाज में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने लगे, तो उसे अन्तर पीढ़ी संघर्ष कहते है।[1] (अग्रवाल, 2010) यह संघर्ष वैचारिक मतभेद के रूप में हो सकता है। यह मतभेद स्वतन्त्रता समानता, मूल्यों, विश्वासों, प्रथाओं एवं परम्पराओं आदि से संबंधित हो सकता है। वर्तमान आधुनिक युग में परिवर्तन की अनेक प्रक्रियाओं एवं

[1]शोध छात्र, [2]विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, दी0 द0 उ0 गो0 वि0, गोरखपुर, E-mail: ajayjigyasu.kumar007@gmail.com

आधुनिक कानूनों के प्रभाव के कारण दो पीढ़ीयों के विचारों में टकराव/संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई है, जिसके कारण संयुक्त परिवार का विघटन होना प्रारम्भ हो गया है।

शोध अध्ययन क्षेत्र खोरठा ग्राम, गोरखपुर जनपद के पिपरौली विकासखण्ड में स्थिति है, यह गाँव गोरखपुर वाराणसी हाइवे से बाधागाड़ा तिराहे से उनवल रोड़ पर 7 कि0मी0 दूरी पर पूरब दिशा में स्थित है। शोध अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से 60 परिवारों का चयन किया गया है। अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्रारूप तथा तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार–अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

बीज शब्दः *अन्तरपीढ़ी, संघर्ष, नवीन, पुरानी पीढ़ी, संयुक्त परिवार, विघटन*

प्रस्तावना

सामान्य तौर पर एक समय में जन्म लेने वाले लोगों के समूह को पीढ़ी कहते हैं, जैसे पुरानी और नयी पीढ़ी। जब समाज में व्यक्तियों के समूह का विभाजन आयु के आधार पर किया जाता है, तो भी यह पीढ़ी ही कहलाती है। सामान्यतः 20–25 वर्ष के अन्तराल के बाद एक नयी पीढ़ी का निर्माण होता है, तथा पहली पीढ़ी दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी तीसरी पीढ़ी या अवस्था में पहुँच जाती है। पीढ़ी शब्द का अंग्रेजी शब्द ळमदमतंजपवद है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है उत्पत्ति, निर्माण या सृजन अर्थात जिसका तात्पर्य उत्पत्ति/उद्वविकास के किसी विशेष चक्र से होता है। लम्बे समय के अन्तराल के बाद समाज में परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक मूल्यों विश्वासों, व्यवहार प्रतिमानों आदि में बदलाव आ जाता है, जिसके कारण व्यक्तियों के विचारों, मूल्यों, आदतों, खान–पान, रहन–सहन में परिवर्तन होने लगता है। एक लम्बे समयान्तराल के बाद समाज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, क्योंकि मनुष्य के विचार, व्यवहार सदैव बदलते रहते है। इसलिए माना जाता है, कि समाज एक परिवर्तनशील अवधारणा है।

सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक संबंधों के सन्दर्भ में व्यक्त करते हुये मैकाइवर एवं पेज ने लिखा है कि समाजशास्त्रीय होने के नाते हमारा प्रत्यक्ष संबंध सामाजिक संबंधों के अध्ययन से हैं, इसलिये सामाजिक संबंधों में होने वाले परिवर्तन को ही हम सामाजिक परिवर्तन कहते है।''[2] (मैकाइवर एवं पेज, 1961)

किग्सले डेविस ने लिखा है कि ''सामाजिक परिवर्तन से हमारा अभिप्राय केवल उन परिवर्तनों से है, जो सामजिक संगठन में होते है,

अर्थात समाज की संरचना और समाज के कार्यो में।''[3] (विद्याभूषण, सचदेव, 1995)

अन्तरपीढ़ी संघर्ष

विश्व का कोई भी समाज हो, उसमें संघर्ष का पाया जाना स्वाभाविक है, क्योंकि संघर्ष समाज की एक अनिवार्य विशेषता है, जैसा कि लेविस कोजर ने संघर्ष के सम्बन्ध में लिखा है यह ''सामाजिक विकास में सहायक प्रक्रिया है। समूह के निर्माण में संगठन और संघर्ष दोनों का महत्व होता है। उन्होंने सामाजिक संघर्ष के प्रकार्यात्मक पक्ष को स्पष्ट किया है।''[4] (लेविस कोजर, 1956) इस प्रकार संघर्ष दो विरोधी पक्षों के बीच होने वाले तनाव के चरमरूप देकर अन्ततः उसे शान्त करता है।

प्रो0 ग्रीन ने संघर्ष को परिभाषित करते हुए लिखा है, कि ''संघर्ष किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों की इच्छाओं का जानबूझकर विरोध करने, रोकने या उन्हें शक्ति से पूर्ण करने संबंधी प्रयास है।''[5] (ग्रीन, 1968)

एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री कार्लमार्क्स ने कम्युनिष्ट पार्टी का घोषणा पत्र के प्रारम्भ में संघर्ष के बारे में लिखा है, कि आज तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है।[6] (कार्लमार्क्स, 1848) इस प्रकार संघर्ष एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में अवश्य पायी जाती है। जैसे– जातिगत संघर्ष, प्रजातीय संघर्ष अन्तरपीढ़ी संघर्ष इत्यादि। जब समाज में दो पीढ़ीयों नयी पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने लगे, तो उसे अन्तरपीढ़ी संघर्ष कहते है। यह संघर्ष वैचारिक मतभेद के रूप में हो सकता है। दो पीढ़ीयों के बीच पाये जाने वाले वैचारिक अन्तर या मतभेद को अन्तरपीढ़ी संघर्ष कहते है, यह वैचारिक मतभेद स्वतन्त्रता, समानता, मूल्यों, विश्वासों, प्रथाओं, परम्पराओं आदि से संबंधित हो सकता है। समान्य रूप से माता–पिता और बच्चों के समूह को परिवार कहते है इस प्रकार के परिवार को केन्द्रीय परिवार कहते है। समाज में केन्द्रीय स्थिति होती है। जैसे भारतीय समाज में पहले परिवार से तात्पर्य संयुक्त परिवार से लिया जाता था।

संयुक्त परिवार एक ऐसा गृहस्थ समूह है, जिसमें माता–पिता तथा उनके विवाहित बच्चे सम्मिलित है। इस प्रकार दो या दो से अधिक पीढ़ी के लोग एक मकान में साथ रहते हैं, एक ही रसोई का बना भोजन करते हैं, तथा सामान्य संपत्ति रखते हैं। प्रो0 के0 एम0

कपाड़िया ने संयुक्त परिवार के सम्बन्ध में लिखा है ''पीढ़ीयों की गहराई को संयुक्त परिवार का महत्वपूर्ण लक्षण मानतें है।''[7] (कपाड़िया, 1958) इसी प्रकार आई0 पी0 देसाई ने लिखा है कि ''हम उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं, जिसमें एकाकी परिवार की अपेक्षा तीन या उससे अधिक पीढ़ीयों के सदस्य सम्मिलित होते हैं, जो एक–दूसरे से संपत्ति, आय और परस्पर अधिकारों तथा कर्तव्यों द्वारा बंधे होते है।[8] (देसाई, 1956) वर्तमान आधुनिक युग में परिवर्तन की अनेक प्रक्रियाओं, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, सांस्कृतिककरण, औद्योगिकरण, नगरीकरण तथा आधुनिक कानूनों के प्रभाव के कारण दो पीढ़ीयों (नयी एवं पुरानी पीढ़ी) के विचारों मे टकराव/अन्तरपीढ़ी संघर्ष की स्थिति हुई है, जिसके कारण संयुक्त परिवार का विघटन होना प्रारम्भ हो गया है।

इसी प्रकार पारिवारिक विघटन को परिभाषित करते हुए इलियट एवं मैरिल ने लिखा है, कि ''पारिवारिक विघटन में हम किन्ही बन्धनों की शिथिलता, आसमंजस्य या पृथक्करण को सम्मिलित करते हैं, जो सदस्यों को एक–दूसरे से बाँधे रखते है।''[9] (इलियट एवं मैरिल, 1961)

समस्या कथन :– अन्तर्पीढ़ी संघर्ष एवं संयुक्त परिवार का विघटन–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन गोरखपुर जनपद में स्थित पिपरौली विकासखण्ड के खोरठा गाँव के विशेष सन्दर्भ मे।

शोध प्रश्न

1. ग्रामीण संयुक्त परिवार में नयी एवं पुरानी पीढ़ी के बीच वैचारिक मतभेद की स्थिति क्या है ?
2. संयुक्त परिवार में पीढ़ीयों के बीच वैचारिक मतभेद क्यों है ?
3. अन्तर्पीढ़ी संघर्ष पर आधुनिक शिक्षा का क्या प्रभाव है ?
4. मानव जीवन शैली पर सोशल मीडिया के साधनों का प्रभाव क्या है ?
5. संयुक्त परिवार में अन्तर्पीढ़ी संघर्ष के आर्थिक कारक कौन–कौन से हैं ?
6. अन्तर्पीढ़ी संघर्ष का संयुक्त परिवार के विघटन पर क्या प्रभाव है ?

शोध का उद्देश्य

1. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ियों के बीच वैचारिक मतभेद की स्थिति ज्ञात करना।

2. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक मतभेद के कारणों का पता लगाना।

3. अन्तरपीढ़ी संघर्ष पर आधुनिक शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. सोशल मीडिया के साधनों का मानव जीवन शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के आर्थिक कारकों का अध्ययन करना।

6. अन्तरपीढ़ी संघर्ष का संयुक्त परिवार के विघटन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना

1. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक मतभेद का कारण समाज में तेज गति से बदलाव है।

2. दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक संघर्ष का कारण परम्परा एवं आधुनिक जीवन मूल्यों में टकराव है।

3. संयुक्त परिवार में अन्तर्पीढ़ी संघर्ष का कारण आधुनिक शिक्षा का प्रभाव है।

4. सोशल मीडिया के साधनों के द्वारा युवा पीढ़ी के जीवन शैली में परिवर्तन हुआ है।

5. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के लिये आर्थिक कारक भी जिम्मेदार है।

6. अन्तर पीढ़ीगत संघर्ष का परिणाम पारिवारिक विघटन है।

शोध साहित्य सर्वेक्षण

1. पाण्डेय शिशिर (2001)[10]– ''स्नातकोत्तर छात्राओं में अंतरपीढ़ी संघर्ष'' पर अपने शोध कार्य के निष्कर्ष में बताया है, कि स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत छात्राओं और उनकी माताओं/अभिभावकों के बीच तमाम मुद्दों, समस्याओं को लेकर संघर्ष/मतभेद विद्यमान है। परिवर्तन की प्रक्रियाओं तथा आधुनिक कानूनों के प्रभाव के कारण नवीन पीढ़ी के सदस्यों/ स्नातकोत्तर छात्राओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुये हैं।

2. राणा, नीलम (2005)[11]–''नगरीय एवं ग्रामीण वृद्ध व्यक्तियों की सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'' में निष्कर्ष प्राप्त किया

3. कि नगरीय एवं ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में वृद्ध मानसिक, उत्पीड़न एवं उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं।

4. त्रिपाठी सुनीता (2007)[12]– बदलते परिवेश में अंतरपीढ़ी संघर्ष के विभिन्न आयामों पर शोध कार्य में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि बदलते परिवेश में दो पीढ़ीयों के मध्य जो मत भिन्नता दृष्टिगत हुई हैं, उसका कारण वर्तमान सामाजिक संरचना का प्रभाव है।

5. कुमार अनूप (2021)[13]– अपने शोध कार्य ''वर्तमान परिवार व्यवस्था–अन्तःपीढ़ी और अन्तरपीढ़ी संघर्ष'' के निष्कर्ष में यह बताया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का यह मानना हैं, कि अन्तःपीढ़ी एवं अन्तरपीढ़ी संघर्ष का कारण जर, जोरू एवं जमीन तथा आधुनिक मान्यतायें हैं जिससे संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है।

सैद्धान्तिक रूपरेखा (Theoretical framwork)

सामाजिक परिवर्तन सिद्धान्त हमारे शोध अध्ययन को समझने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है कि समय एवं समाज में होने वाले परिवर्तनों से पीढ़ीयों में अन्तर या दूरी बढ़ती है तथा संयुक्त परिवार की संरचना एवं संतुलन प्रभावित हो रही है।

संघर्षवादी सिद्धान्त (Conflict Theory) :– संघर्ष सिद्धान्त को नवीन एवं व्यवस्थित रूप प्रदान करने में कार्लमार्क्स और फ्रेडरिक एंजिल्स का प्रमुख योगदान रहा है। कार्लमार्क्स के अनुसार विभिन्न समाजों में वर्ग संघर्ष का कारण आर्थिक अर्थात उत्पादक संपति/ शक्तियों का स्वामित्व है। मार्क्स ने उत्पादक संपत्ति के स्वामित्व के लिए विभिन्न वर्गो में संघर्ष की बात कहीं।

यह सिद्धांत अन्तर्पीढ़ी संघर्ष एवं संयुक्त परिवार का विघटन शोध विषय का अध्ययन करने के लिये अत्यधिक प्रासंगिक है जहाँ आर्थिक असमानताएं, संसाधन एवं प्रतिस्पर्धा पीढ़ीयों के बीच तनाव उत्पन्न करती हैं। संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के लिये आर्थिक कारक भी जिम्मेदार हैं, पारिवारिक तनाव हेतु संपत्ति का बटवारा, संसाधनों का अभाव एवं अधिकता तथा प्रतिस्पर्धा आदि आर्थिक कारकों की अहम भूमिका हैं।

इस सैद्धान्तिक ढ़ाँचे को लागू करके वर्तमान शोध अध्ययन में यह खोज किया जा सकता है, कि आर्थिक असमानताएं कैसे परिवार में दो पीढ़ीयों में विवादों को बढ़ावा देती है तथा समान संपत्ति/संसाधनों का वितरण और संवाद के जरिये संघर्ष को कम या समाप्त करने के उपाय

किये जा सकते हैं। इस प्रकार कार्ल मार्क्स का अपने संघर्ष सिद्धान्त में आर्थिक कारकों के आधार पर वर्ग संघर्ष की बात करते है, वही दूसरी तरफ उनके इस सिद्धान्त के माध्यम से एक नया निष्कर्ष निकलता है, आर्थिक कारकों से केवल वर्गों में ही संघर्ष नहीं होता बल्कि संयुक्त परिवारों में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के लिए आर्थिक कारक भी जिम्मेदार है। हीगल ने स्पष्ट किया है कि ''सभी क्रियाओं का बुनियादी स्रोत विचार हैं''[14]; Ideas are the facendation of all actions)¼ पाण्डेय, 2014) – हीगल ने वाद–प्रतिवाद तथा संवाद को स्पष्ट किया है। कोजर ने ''सामाजिक संघर्ष के प्रकार्यात्मक पक्ष को उजागर किया है, और यह बताया कि लोगो की यह आम धारणा गलत है, कि सामाजिक संघर्ष के केवल विघटनात्मक परिणाम ही उत्पन्न होते है, वास्तव में सामाजिक संघर्ष का संगठनात्मक प्रकार्य कही अधिक महत्त्वपूर्ण है।''[15] (मुखर्जी 2015)। लेविस कोजर ने संघर्ष का प्रकार्यवादी सिद्धान्त दिया, और बताया कि संघर्ष का प्रभाव समाज में केवल विघटनकारी ही नही अपितु संगठनकारी भी होता है, इससे समाज में एकता मजबूत होती है।

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक सिद्धान्त :– इस सिद्धान्त के अनुसार परिवार समाज का एक महत्वपूर्ण अंग या संस्था है, सदस्यों का उचित समाजीकरण, भरण–पोषण, देख–रेख भावनात्मक लगाव एवं प्रोत्साहन आदि इसके प्रमुख कार्य है, किन्तु इन कार्यो के उचित ढ़ंग से ना होने से संयुक्त परिवार विघटित होने लगते हैं। जिसका प्रभाव समाज पर भी अवश्य पड़ता है। इस दृष्टि से यह सिद्धान्त वर्तमान शोध अध्ययन हेतु प्रासंगिक है। इस सैद्धान्तिक ढ़ाँचे के द्वारा यह पता लगाया जा सकता है, कि कैसे पारिवारिक जिम्मेदारियो के निर्वहन के अभाव में संयुक्त परिवार का संतुलन बिगड़ता हैं।

''सावयवी सादृश्यता पर आधारित ऐसा सिद्धान्त, जिसके अनुसार समाज एक ऐसी संगठीत एवं आत्म–अनुरक्षित व्यवस्था है, जिसमें विरोधी परिवर्तन की स्थिति में भी संतुलन बना रहता है।''[16] (रावत 2017) यह सिद्धान्त समाज को एक व्यवस्था मानता है, जिसके विभिन्न भाग या संस्थाएं आपस में अन्तर्सबन्धित होते हैं, तथा प्रत्येक भाग या संस्था अपने प्रकार्यात्मक योगदान के द्वारा व्यवस्था को बनाये रखते हैं। इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रस्तावक अगस्त कोंत, हरबर्ट–स्पेन्सर, दुर्खीम, पारसंस तथा राबर्ट मर्टन हैं। किन्तु समाजशास्त्र में इसे व्यवस्थित एवं एक वैज्ञानिक अवधारणा के रूप में प्रयोग किये जाने का श्रेय एमिल

दुर्खीम को जाता है। इस सिद्धान्त को आगे बढ़ाने में पारसंस एवं मर्टन की भी विशेष भूमिका रही। (रावत 2017)

प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया सिद्धान्त (Theory of Symbolic Interactionism) :– इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य समाज एवं परिवार में आपसी व्यवहार या अंतक्रियाए प्रतीकों के माध्यम से करता है। ये प्रतीक भाषा, शब्द, संकेत, भाव एवं भाव–मुद्राओं आदि के द्वारा अभिव्यक्त किये जाते हैं। इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रवर्तकों में जार्ज हरबर्ट मीड एवं ब्लूमर का नाम आता है। इस सिद्धान्त के अनुसार परिवार में संबंध प्रतीकों, भाषा आदि के द्वारा होने वाले अन्तःक्रिया से बनते है। इस दृष्टि से यह सिद्धान्त हमारे शोध अध्ययन, हेतु उपयोगी एवं प्रासंगिक हो सकता है। इस सैद्धान्तिक ढ़ाँचें का उपयोग करके इस नवीन तथ्य की खोज की जा सकती है, कि परिवार में दो पीढ़ीयों के सदस्य आपस में प्रतीकों भाषा और अर्थो के माध्यम से कैसे संवाद करते हैं। पीढ़ीयों के बीच संवाद की कमी एवं गलत फहमी के कारण तनाव एवं संघर्ष उत्पन्न होता है, जो अन्तर्पीढ़ी संघर्ष का कारण बनता है।

शोध अंतराल (Research Gap) शोध साहित्य समीक्षा यह प्रस्तुत करता है, कि संयुक्त परिवार या संयुक्त परिवार के विघटन पर अनेकों शोध हुये हैं, किंतु अन्तर्पीढ़ी संघर्ष एवं संयुक्त परिवार का विघटन से संबंधित विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र पर आधारित अत्यन्त सीमित अध्ययन हुये हैं। इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता है। इस विषय पर शोध अध्ययन को विस्तार देने हेतु मैने यह शोध कार्य किया है।

अवधारणात्मक रूपरेखा (Conceptual framwork) :–

स्वतन्त्र चर :–अन्तर्पीढ़ी संघर्ष

- आर्थिक कारक
- शहरीकरण और प्रमाण
- शिक्षा एवं जागरूकता
- प्रोद्योगिकी प्रभाव

मध्यस्थ चर

- संवाद की कमी
- आपसी विश्वास और सम्मान में कमी

- सामाजिक मान्यताओं में बदलाव
- पीढ़ीयों के बीच निर्भरता में कमी
- पारिवारिक भूमिकाओं और कर्तव्यों का क्षीण होना

निर्भरशील चर :– संयुक्त परिवार का विघटन

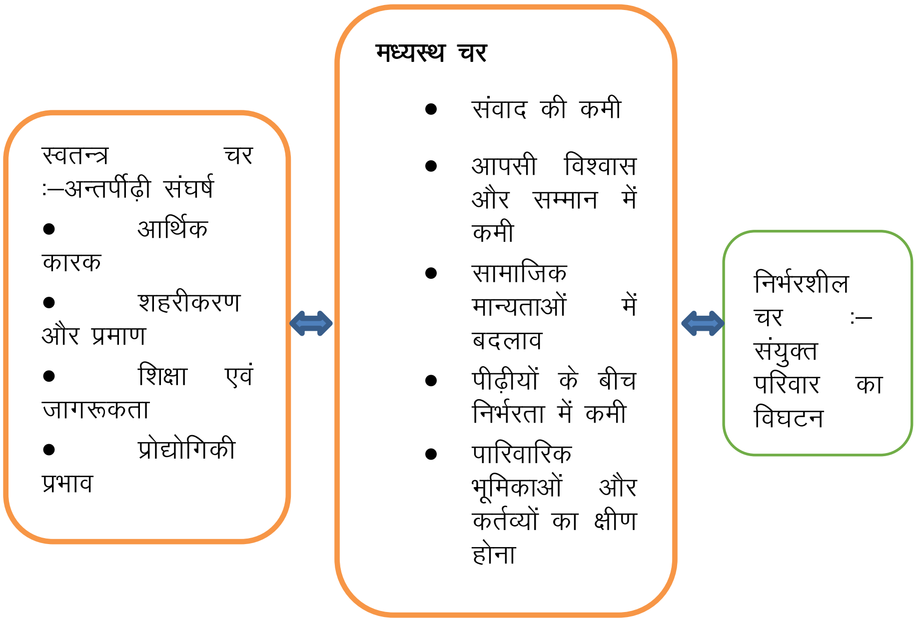

शोध का महत्व – यह शोध अध्ययन दो पीढ़ीयों (नवीन एवं पुरातन) के बीच होने वाले वैचारिक मतभेद एवं संघर्ष तथा उसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार के विघटन/पारिवारिक विघटन को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने, उनके कारणों एवं प्रभावों का मूल्यांकन करने और समाज में सामंजस्य बनाए रखने के लिए व्यावहारिक समाधान सुझाने में सहायता प्रदान करेगा। दो पीढ़ीयों के बीच उत्पन्न मतभेदों और उनके परिणामों को समझनें हेतु महत्वपूर्ण हो सकता है। सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास ने पारिवारिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया है, यह समझने में महत्वपूर्ण होगा।

अध्ययन क्षेत्र :– खोरठा ग्राम, गोरखपुर जनपद के पिपरौली विकास खण्ड में स्थित है, यह गाँव गोरखपुर वाराणसी हाइवे से होते हुए

बाघागाड़ा तिराहे से उनवल रोड़ पर 7 कि0 मी0 की दूरी पर पूरब दिशा में स्थित है, पायलेट सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि खोरठा गाँव पक्की सड़क से जुड़ गया है। यहाँ के लोगों का मुख्य

अध्ययन समग्रः– प्रस्तुत शोध के लिए अध्ययन क्षेत्र का चुनाव गोरखपुर जिले के पिपरौली विकास खण्ड के अन्तर्गत खोरठा गाँव के 60 परिवारों का चयन समग्र हेतु किया गया है, लगभग 258 परिवारों में से उत्तरदाताओं का चयन सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है। इन उत्तरदाताओं को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है, पहली श्रेणी के अन्तर्गत नवीन या युवा पीढ़ी जिनकी आयु 18 से 40 वर्ष के बीच तथा दूसरी पीढ़ी के अन्तर्गत उत्तरदाता पुरानी पीढ़ी के है, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर है। प्रत्येक परिवार से एक युवा एवं एक पुरानी पीढ़ी के उत्तरदाता का चयन किया गया। इन उत्तरदाताओं में सभी जाति, धर्म, लिंग एवं शैक्षिक स्तर के लोग शामिल हैं।

व्यवसाय कृषि, नौकरी एवं मजदूरी है। यह गाँव आमी नदी के पश्चिम की ओर स्थित है।

शोध प्रविधियाँ/वैज्ञानिक पद्धतियाँ :– प्रस्तुत शोध आनुभाविक अध्ययन पर आधारित है, इस हेतु अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है।

तथ्य संकलन के स्रोत :– वर्तमान शोध अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर किया गया, जिस हेतु शोध उपकरण साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करते हुये उत्तरदाताओं से अन्तर्पीढ़ी संघर्ष से सम्बन्धित विविध आयामों पर जानकारी एकत्र किया गया। प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत खोरठा गाँव के परिवारों को एक सामाजिक ईकाई मानकर वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के द्वारा अध्ययन किया गया। आवश्यकतानुसार द्वितीयक आँकड़ों के संकलन हेतु शोध विषय से सम्बन्धित प्रलेख, सरकारी आँकड़ों प्रतिवेदन, पत्र–पत्रिकाओं इण्टरनेट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ पुस्तकों आदि का सहारा लिया गया।

संयुक्त परिवारों में अन्तर्पीढ़ी द्वन्द्व की स्थिति

दो पीढ़ीयों के विचारों में भिन्नता के कारण मतभेद की स्थिति उत्पन्न होती है। व्यक्तियों में वैचारिक भिन्नता का होना स्वाभाविक हो सकता है। क्योंकि व्यक्तियों के सोचने एवं समझने का दृष्टिकोण अलग–अलग होता है खोरठा गाँव में दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक मतभेद की स्थिति का विवरण सारणी सं0'1.1 में हाँ/नहीं के अनुसार दर्शाया गया है

सारणी सं0–1.1 संयुक्त परिवार में अन्तपीढ़ी द्वन्द्व की स्थिति

क्र. स.	संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों में वैचारिक मतभेद की स्थिति	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	हाँ	48	80.00	48	80.00	96	80.00
02.	नहीं	12	20.00	12	20.00	24	20.00
	योग	60	100	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी सं0 1.1 से यह स्पष्ट होता है, कि नयी एवं पुरानी दोनों पीढ़ीयों के 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके परिवार में वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी प्रकार दोनों पीढ़ीयों के 20 प्रतिशत सदस्यों का मानना है, कि उनके परिवार में वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

ग्रामीण परिवारों में दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक मतभेद के कारण

समयान्तर के कारण समाज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, समाज में परिवर्तन के फलस्वरूप व्यक्तियों के विचारों में भी बदलाव हुये हैं, इस परिवर्तन का प्रभाव पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा नवीन पीढ़ी के सदस्यों पर ज्यादा पड़ा है इसके परिणाम स्वरूप पीढ़ीयों के विचारों में टकराव की स्थिति उत्पन्न हुई हैं। इस संबंध में उत्तरदाताओं की राय का विवरण सारणी सं0 1.2 में प्रस्तुत किया गया हैं–

सारणी सं0 1.2 संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों (नवीन एवं पुरानी) में वैचारिक द्वन्द्व के कारण संयुक्त परिवार में अन्तपीढ़ी द्वन्द्व की स्थिति

क्र. स.	संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों में वैचारिक द्वन्द्व के कारण	नवीन पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	समाज में तेज गति से बदलाव	14	23.33	16	26.66	30	25.00
02.	परम्परा एवं आधुनिक जीवन मूल्यों में टकराव	10	16.67	12	20.00	22	18.33
03.	आधुनिक शिक्षा का प्रभाव	12	20.00	08	13.34	20	16.67
04.	पीढ़ीयों के बीच मूल्यों दृष्टिकोणों एवं प्राथमिकताओं में अन्तर	08	13.34	06	10.00	14	11.66
05.	नये मूल्यों के अनुसार स्वतन्त्र जीवन–यापन एवं उस नियन्त्रण	16	26.66	18	30.00	34	28.34

	योग	60	100	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी सं0 1.2 से स्पष्ट होता है, कि नयी पीढ़ी के 23. 33 प्रतिशत उत्तरदाता एवं पुरानी पीढ़ी के 26.66 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में वैचारिक द्वन्द्व का कारण समाज में तेज गति से बदलाव को मानते है; जबकि नयी पीढ़ी के 16.67 प्रतिशत तथा पुरानी पीढ़ी के 20 प्रतिशत उत्तरदाता वैचारिक द्वन्द्व का कारण परम्परा एवं आधुनिक जीवन मूल्यों में टकराव को मानते हैं। पुनः नयी पीढ़ी 20 प्रतिशत तथा पुरानी पीढ़ी के 13.34 प्रतिशत उत्तरदाता वैचारिक मतभेद को नयी पीढ़ी के 13.34 प्रतिशत तथा पुरानी पीढ़ी के 10 प्रतिशत उत्तरदाता पीढ़ीयों के बीच मूल्यों दृष्टिकोणों तथा प्राथमिकताओं में अन्तर को वैचारिक द्वन्द्व का कारण, नये मूल्यों के अनुसार स्वतन्त्र जीवन–यापन एवं उस पर नियन्त्रण को नयी पीढ़ी के 26.67 प्रतिशत तथा पुरानी पीढ़ी के 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैचारिक द्वन्द्व का कारण स्वीकार किया है।

सामाजिक मीडिया के साधनों/प्लेटफार्म का युवा पीढ़ी के जीवन शैली पर प्रभाव

मोबाइल, इण्टरनेट, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम, व्हाड्सऐप आदि सोशल मीडिया के अनेक साधनों/प्लेटफार्मों ने मानव जीवन शैली को अत्याधिक प्रभावित किया है, जिसके कारण नयी पीढ़ी के सदस्यों के जीवन–मूल्यों, खान–पान, रहन–सहन एवं विचारों में काफी परिवर्तन हुआ है।

अन्तरपीढ़ीगत संबंधों पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव

सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारकों में शिक्षा की भूमिका अहम है। शिक्षण पद्वतियों में जो बदलाव हुये हैं, विशेषकर तकनीकी बदलाव, उसे ही आधुनिक शिक्षा कहते हैं। आधुनिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी/तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों को खेल विधि, करके सीखने एवं योजना आदि शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग कर शिक्षण कार्य किया जाता है, छात्रों में विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक सोच विकसित किया जाता है। इण्टरनेट या सोशल मीडिया के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। आधुनिक शिक्षा के द्वारा नयी पीढ़ी के सदस्यों की सोच में बदलाव आया है। सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण वैयक्तिक मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है। युवा पीढ़ी के सदस्य नये

मूल्यों को अपनाने लगे हैं, जिसके कारण वैचारिक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हुई है।

सारणी सं0 1.3

आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से वैचारिक मतभेद संबंधी उत्तरदाताओं की राय

क्र. स.	आधुनिक शिक्षा के प्रभाव एवं वैचारिक मतभेद	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्त	प्रतिशत	आवृत्त	प्रतिशत	आवृत्त	प्रतिशत
01.	तर्क करने की प्रवृति	21	35.00	18	30.00	39	32.50
02.	नये मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं उसके प्रति झुकाव/अनुकूलन	18	30.00	12	20.00	30	25.00
03.	स्वतन्त्र निर्णय लेने की प्रवृत्ति	18	30.00	24	40.00	42	35.00
04.	संतुष्ट नहीं	03	05.00	06	10.00	09	7.5
	योग	60	11	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी सं0 1.3 से यह स्पष्ट होता है, कि नयी पीढ़ी के 35 प्रतिशत उत्तरदाता तथा पुरानी पीढ़ी के 30 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच मतभेद को आधुनिक शिक्षा के प्रभाव के कारण तर्क करने की प्रवृत्ति को मानते हैं तथा नयी पीढ़ी के 30 प्रतिशत तथा पुरानी पीढ़ी के 20 प्रतिशत उत्तरदाता नये मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं उसके प्रति अनुकूलन को, एवं नयी पीढ़ी के 30 प्रतिशत एवं पुरानी पीढ़ी के 40 प्रतिशत उत्तरदाता स्वतन्त्र निर्णय लेने

की प्रवृत्ति को वैचारिक द्वन्द्व का कारण मानते है। जबकि नयी पीढ़ी के 5 प्रतिशत एवं पुरानी पीढ़ी 10 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक शिक्षा के प्रभाव के कारण वैचारिक द्वन्द्व की स्थिति से संतुष्ट नहीं है।

सारणी सं0 1.4 सोशल मीडिया के साधनों का युवा–पीढ़ी के जीवन शैली पर प्रभाव से संबंधितउत्तरदाताओं की राय

क्र. स.	सोशल मीडिया का युवा–पीढ़ी के जीवन शैली पर प्रभाव	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	सहमत	54	90ण्00	48	80.00	102	85.00
02.	टसहमत	6	10.00	12	20.00	18	15.00
	योग	60	100	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी सं0 1.4 से यह स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत नयी पीढ़ी के उत्तरदाता एवं 80 प्रतिशत पुरानी पीढ़ी के उत्तरदाता का मानना है, कि सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों से युवा पीढ़ी की जीवन शैली में बदलाव हुआ है, जबकि नयी पीढ़ी के 10 प्रतिशत एवं पुरानी पीढ़ी के 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति जतायी है।

संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के आर्थिक कारक

संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के आर्थिक कारक भी जिम्मेदार हैं। पारिवारिक तनाव हेतु आर्थिक कारकों की अहम भूमिका है। इन आर्थिक कारकों को निम्न सारणी सं0 1.5 के माध्यम से दर्शाया गया है।

सारणी सं0 1.5 संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के आर्थिक पहलू

क्र. स.	दो पीढ़ीयों के बीच संघर्ष के आर्थिक कारक	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	आर्थिक आत्मनिर्भरता	24	40.00	27	45.00	51	42.50
02.	आर्थिक समस्या (परिवार में आर्थिक सहयोग की असमानता)	36	60.00	33	55.00	69	57.50
	योग	60	100	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी सं0 1.5 से यह प्रदर्शित होता है कि नयी पीढ़ी के 40 प्रतिशत एवं पुरानी पीढ़ी के 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है, कि संयुक्त परिवार में अन्तर्पीढ़ी द्वन्द्व का कारण आर्थिक आत्मनिर्भरता है, एवं 60 प्रतिशत नयी एवं 55 प्रतिशत पुरानी पीढ़ी के उत्तरदाताओं का मानना है, कि द्वन्द्व का कारण आर्थिक समस्या है। अर्थात परिवार में आर्थिक सहयोग के असमान स्तर के कारण दो पीढ़ीयों में द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होती है।

सारणी सं0–1.6 खोरठा गाँव के संयुक्त परिवारों में माता–पिता और उनके संतानों के बीच संबंध का विवरण

क्र.स.

	माता पिता एवं उनके संतानों के बीच संबंध	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	अत्याधिक स्नेहपूर्ण	09	15.00	09	15.00	18	15.00
02.	सामान्य	18	30.00	18	30.00	36	30.00
03.	तनाव पूर्ण	33	55.00	33	55.00	66	55.00
	योग	60	100	60	100	120	100.00

उपर्युक्त सारणी सं0 1.6 से स्पष्ट होता है, कि माता–पिता एवं उनके संतानों के बीच संबंध से संबंधित नयी एवं पुरानी दोनों पीढ़ीयों की राय एक समान है। अर्थात 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय है, कि माता–पिता एवं उनके बीच सम्बन्ध अत्यधिक स्नेहपूर्ण है। जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय सामान्य और 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय है, कि उनके परिवार संबंधित तनावपूर्ण है।

सारणी सं0 1.7 अन्तर्पीढ़ी संघर्ष का संयुक्त परिवार के विघटन पर प्रभाव

अन्तर्पीढ़ी संघर्ष का परिणाम संयुक्त परिवार का विघटन हो सकता है, क्योंकि दो पीढ़ीयों में होने वाला वैचारिक द्वन्द्व का पारिवारिक सम्बन्धो पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण पारिवारिक तनाव और पारिवारिक तनाव के कारण संबंधों में दुरियाँ उत्पन्न हो सकती है।

संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों में द्वन्द्व के परिणाम स्वरूप–पारिवारिक तनाव संयुक्त परिवार का विघटन के संबंध में उत्तरदाताओं की राय इस प्रकार है :–

क्र. स.	अन्तर्पीढ़ी संघर्ष के परिणाम स्वरूप पारिवारिक तनाव	नयी पीढ़ी		पुरानी पीढ़ी		योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
01.	हाँ	43	71.67	43	71.67	86	86
02.	नहीं	17	28.33	17	28.33	34	34
	योग	60	100	60	100	120	100

उपर्युक्त सारणी संख्या– 1.7 से स्पष्ट होता है कि नयी एवं पुरानी पीढ़ी के 71.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं तथा पुनः क्रमशः 28.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि अन्तरपीढ़ी संघर्ष के कारण परिवार में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है, जिसके कारण संयुक्त परिवार का विघटन होने लगता है।

शोध अध्ययन का निष्कर्ष :– प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हुये जिन आनुभविक आँकड़ों को एकत्र किया गया है उनके संकेतीकरण, सारणीयन, वर्गीकरण और निर्वचन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं –

1. शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों (नई एवं पुरानी पीढ़ी) के बीच वैचारिक मतभेद की स्थिति विद्यमान है। नयी एवं पुरानी पीढ़ी के 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस उपकल्पना की पुष्टि की है।
2. संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक द्वन्द्व का कारण समाज में तेज गति से बदलाव, परम्परा एवं आधुनिक जीवन मूल्यों में टकराव, आधुनिक शिक्षा का प्रभाव, पीढ़ीयों के बीच, मूल्यों दृष्टिकोणों एवं प्राथमिकताओं में अन्तर, स्वतन्त्रता बनाम नियन्त्रण नये मूल्यों के अनुसार स्वतन्त्र जीवन यापन एवं उस पर नियंत्रण है। इसकी पुष्टि नयी एवं पुरानी पीढ़ी के उत्तरदाताओं ने की है। नयी पीढ़ी के अधिकतम 23.33 एवं पुरानी पीढ़ी के 26.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने

3. समाज में तेज गति से बदलाव को, तथा क्रमशः 26.66 तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वतन्त्र जीवन–शैली एवं उस पर नियन्त्रण को द्वन्द्व का कारण मानते है।

4. सोशल मीडिया के विभिन्न साधनो/प्लेट फार्मों जैसे मोबाइल, इण्टरनेट, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप आदि का युवापीढ़ी की जीवन–शैली पर प्रभाव पड़ा है, इसने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है, जिसके कारण विशेषकर युवा/नयी पीढ़ी के जीवन मूल्यों, दृष्टिकोणों विचारों, खान–पान, रहन–सहन आदि में काफी बदलाव हुआ है। नयी पीढ़ी के 90 प्रतिशत उत्तरदाता एवं पुरानी पीढ़ी के 80 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं।

5. शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के बीच द्वन्द्व का कारण आधुनिक शिक्षा का प्रभाव है। आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से नयी पीढ़ी के सदस्यों में 1. तर्क करने की क्षमता, 2. नये मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं उसके प्रति अनुकूलन, 3. स्वतंत्र निर्णय लेने की प्रवृति का विकास हुआ है, जो वैचारिक द्वन्द्व का कारण है। नयी पीढ़ी के 35 एवं पुरानी पीढ़ी के 30 प्रतिशत उत्तरदाता तथा क्रमशः 30 एवं 20, 30 एवं 40, 5 एवं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उपकल्पना को प्रमाणित किया है।

6. शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दो पीढ़ीयों के बीच वैचारिक द्वन्द्व का कारण आर्थिक पहलू भी है। पहला आर्थिक कारण आर्थिक रूप से आत्म–निर्भरता तथा दूसरा आर्थिक समस्या अर्थात परिवार में आर्थिक सहयोग की असमानता है। आजकल नयी पीढ़ी के लोग आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर हो रहें जिसके कारण वे संयुक्त परिवार से अलग रहने की सोचते है। रोजगार की तलाश में लोग गाँवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, जिसके कारण संयुक्त परिवार टूट रहे है। परिवार में आर्थिक सहयोग की असमानता के कारण भी वैचारिक द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो रही है। नयी पीढ़ी के 40 एवं पुरानी पीढ़ी के 45 तथा क्रमशः 60 एवं 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसकी पुष्टि की है।

7. शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दो पीढ़ीयों में द्वन्द्व के परिणाम स्वरूप परिवार में तनाव और तनाव के कारण संबंधों में दुरियों की स्थिति उत्पन्न होती है, यह स्थिति संयुक्त परिवार को विघटित कर एकाकी परिवार की स्थापना करने के लिए प्रेरित कर रही है।

8. इस प्रकार इस शोध अध्ययन के अन्त में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अन्तरपीढ़ी संघर्ष और संयुक्त परिवार के विघटन के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। जब संयुक्त परिवार में दो पीढ़ीयों के विचारों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है और उसका समाधान नही होता तो पारिवारिक संबंधों मेंदूरियां बढ़ जाती है और सामंजस्य की कमी के कारण संयुक्त परिवार का विघटन हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अग्रवाल, डॉ0 गोपाल कृष्ण (2010), ''सामाजिक विघटन,'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।

2- Maciver R.M. page charlsh. 1961"society- An introduction Analysis"- Holt, Rinehart and Winston Publication New York, USA.

3- Davis, Kingsley, (1949) "Human Society," The Macmillan Company New Yark 665 pp

4- Coser lewis (1956), "The function of Social Conflict," New York Free Press.

5- Green, Arnold w (1968), "Society- An Analysis of life in Modern Society" Me Graw-Hill Book Company, New York-1014

6- Marx, Karl and Engles Friedrich, (1848/1948), "Manifesto of Communist Party," New York International Publish Maryanski, Alexendra.

7- Kapadia, K.M. (1958), "Marriage and family in india," oxford University Press, Bombay.

8- Desai, I.P. (1956), "Joint family in India:" An analysis Sociologycal Bulletin.

9- Elliott, Mabel, A. and Merrill, francis, E. (1961),"Social disorganisation," Harper & Row, Publishers New York Evanston, and London 4th edition.

10. पाण्डेय, शिशिर (2001), स्नातकोत्तर छात्राओं में अन्तर्पीढ़ी संघर्ष।

11. राणा, नीलम (2005), नगरीय एवं ग्रामीण वृद्ध व्यक्तियों की सामाजिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।

12. त्रिपाठी, सुनीता (2007), बदलते परिवेश में अन्तर्पीढ़ी संघर्ष के विभिन्न आयामों का एक सामाजशास्त्रीय अध्ययन।

13. कुमार, अनुप (2021), वर्तमान परिवार व्यवस्था अन्तःपीढ़ी और अन्तर्पीढ़ी संघर्ष।

14. पाण्डेय, प्रो0 पी0एन0, (2014), कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी प्रा0लि0, नई दिल्ली

15. मुखर्जी, रविन्द्र नाथ (2015), समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली।

16. रावत, हरिकृष्ण (2017), उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश (पृ0–196,197), रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

17. सिंह प्रो0 श्यामधर (2020),''वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व,'' सपना अशोक प्रकाशन 3/552, रामपुर, रामनगर वाराणसी।

18- Open AI Chat Gpt (2024), Retrived on November 21, 2024 https: Chat Openai.com

19- OpenAE (2025, June,7) Explanation of Strural Function theory in the contect of family and inter generational contlict. (CHAT Gpt https:// Chat.open ai.com

20- OpenAE (2025, June,7) Explanation of symbolic interationism in the contert. (CHAT Gpt https:// Chat.open ai.com

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).